# भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन में काँगड़ा के कुख्यात क्राँतिकारी यशपाल का योगदान

डॉ अमर सिंह पराशर
ऐसोसिएट प्रोफेसर, विभाग इतिहास राजकीय महाविद्यालय धर्मशाला (हि॰प्र॰)

सार:- (*Abstract*) यशपाल काँगड़ा क्षेत्र के ही नहीं बल्कि भारत के एक कुख्यात क्राँतिकारी थे। उन्होंने स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए क्रान्तिकारी तरीकों व अहिंसात्मक साधनों को अपनाकर अंग्रेजों को बलपूवर्क वाहर निकालने के लिए संघर्ष किया और अपना सारा जीवन भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन को अर्पित कर दिया।

1.भूमिका:-

काँगड़ा क्षेत्र में अंग्रेजों के विरूद्ध, स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए क्राँतिकारी आन्दोलन की शुरूआत 1905 में हुई। जव यशपाल वड़े हुए तो उन्होंने भी क्राँतिकारी आन्दोलन में वढ़ चढ़ कर भाग लेना शुरू किया।

2. साहित्य की समीक्षाः-

मैंने यह शोध शिर्षक इसलिए चुना है क्योंकि भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन पर अनेक शोध कार्य किए गये हैं। परन्तु कॉगड़ा के स्वतंत्रता सेनानियों ने भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन जो सक्रिय कार्य किया और भारत की आजादी में अपना योगदान दिया, इस पर आज दिन तक किसी भी शोधार्थी ने गहनता से शोध नहीं किया है।

3. उद्देश्यः-

इस शोधकार्य में शोधार्थी का उद्देश्य काँगड़ा क्षेत्र के स्वतंत्रता सेनानियों तथा आम जनता की राजनीतिक गतिविधियों व कुर्वानियों को भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के साथ जोड़ना हैं ।

4.कार्यप्रणालीः-

इस शोधकार्य में शोधार्थी ने मौखिक तथा हस्तलिखिक दोनों प्रकार की सामग्री को प्रयोग में लाया गया है। मौखिक सामग्री शोधार्थी ने अति दुर्लभ स्थानों जाकर साक्षात्कारों के माध्यम से इक्कट्ठी की गयी है तथा लिखिक सामग्री के लिए शोधार्थी ने समस्त काँगड़ा क्षेत्र का सर्वेक्षण किया है।

5.योगदानः-

यशपाल का जन्म 3 दिसम्बर,1903 को फिरोज़पुर छावनी में एक खत्री परिवार में हुआ। इनके पिता स्व॰श्री हीरा लाल वर्तमान हिमाचल प्रदेश के जिला हमीरपुर के रंघाड,भूम्पल में रहते थे।[1] यशपाल की माता स्व॰श्रीमती प्रेमी देवी फ़िरोजपुर छावनी, पंजाब के अनाथ विद्यालय में अध्यापिका थी। वह एक साहसी, सहनशील एवं परिश्रमी महिला थी। माता के गुणों का यशपाल पर गहरा प्रभाव पड़ा।[2] यशपाल की माँ प्रेमी देवी अपने बेटे को स्वामी दयानन्द के आदर्शों के अनुरूप एक तेज़स्वी वैदिक ब्रह्मचारी तथा श्रेष्ठ वेद प्रचारक बनाना चाहती थी। आर्य समाजी वातावरण में शिक्षा दीक्षा प्रदान करने के लिए सात वर्ष की आयु में उन्हें गुरूकुल काँगड़ी हरिद्वार में भर्ती करवा दिया गया। यहाँ उन्होंने खड़ाऊँ पहन कर चलना, काठ पर सोना, ठण्डे पानी से नहाना और भोजन के बाद अपने बर्तन स्वयं माँजना आदि गुरूकुल के अनुरूप आदतें डाली। यह संस्था अनुशासन और वैदिक अध्ययन के लिए विशेष प्रसिद्ध तथा राष्ट्रीय भावना की उद्गम स्थली थी।

यशपाल को क्राँति की भावना पारिवारिक संस्कारों से ही उपलब्ध हुई और विदेशी शासन के कारण देश की सोचनीय अवस्था से भी उसका हृदय उद्वेलित हो उठा। उनकी पारिवारिक आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। अतः यहाँ उन्हें निःशुल्क शिक्षा दी जाती थी।[3]

यशपाल ने अपनी कृति में एक स्थल पर क्राँतिकारी बनने के कारणों का उल्लेख करते हुए कहा कि:-

"सशस्त्र क्राँति की ओर और मेरी प्रवृति में मुझे अनेक कारणों एवं परिस्थितियों का प्रभाव दिखाई देता है। जिसमें सामाजिक भावना, अपनी पारिवारिक और आर्थिक स्थिति, चारों ओर के वातावरण से ली हुई प्रेरणायें और स्वाधीनता आन्दोलन के वातावरण का प्रभाव विद्यमान था।"[4]

सन् 1917 में यशपाल को डी॰ए॰वी॰ स्कूल लाहौर भेज दिया गया। यहाँ पर उन्होंने उर्दू भाषा का अच्छा ज्ञान प्राप्त किया। इन्हीं दिनों वे स्वतन्त्रता आन्दोलन की क्राँतिकारी गतिविधियों से भी परिचित हुए। उनका एक क्राँतिकारी के रूप में प्रवेश इसी दौरान हुआ।[5]

1919 में रोल्ट ऐक्ट के विरूद्ध आन्दोलन स्थगित हो जाने के कुछ दिन बाद उसकी माता का स्थानान्तरण लाहौर से पुनः फिरोज़पुर छावनी हुआ और वे भी यहाँ आ गये। अतः यशपाल को वहीं पर एक सरकार स्कूल में दाखिल करवाया गया।[6] 1921 को फिरोज़पुर में काँग्रेस के असहयोग आन्दोलन में और युवकों की तरह भाग लेना शुरू किया तथा छावनी में विदेशी कपड़ों की होली जलाई।[7]

1921 में उन्होंने प्रथम श्रेणी में दसवीं की परीक्षा उतीर्ण की।[8] दसवीं की परीक्षा पास करने के उपरान्त यशपाल लाला लाजपतराय द्वारा संचालित नैशनल कालेज में प्रविष्ट हुए।[9] नैशनल कालेज का वातावरण पूर्णतया राष्ट्रीय भावना से ओत प्रोत था। इसी कालेज में उनका परिचय सरदार भगत्सिंह, सुखदेव और भगवतीचरण बोहरा से हुआ। शीघ्र ही वे घनिष्ठ मित्र बन गए और देश की आज़ादी के लिए अपने योगदान की कार्ययोजना बनाने लगे।[10]

यशपाल अपने अध्ययन काल में वे लेखन कार्य की ओर भी उत्कृष्ट हुए। उन दिनों यशपाल द्वारा लिखी गई पहली कहानी बरेली से प्रकाशित् होने वाली पत्रिका 'भ्रमर' में प्रकाशित् हुई थी।[11]

यशपाल ने इस दौरान परिवार की आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए विभिन्न स्थानों में नौकरी की। यशपाल ने प्रसिद्ध काँग्रेसी नेता डा॰गोपीचन्द भार्गव के सचिव के तौर पर भी कार्य किया। उन्हें वहाँ सेवा समिति और व्यायाम समिति का अतिरिक्त कार्यभार सौंपा गया। वहाँ कार्य करते हुए उन्हें काँग्रेस द्वारा चलाए जा रहे स्वतन्त्रता आन्दोलन की गतिविधियों का परिचय मिलता रहा।[12] यशपाल नौकरी को अलविदा कहकर क्राँतिकारी गतिविधियों में भाग लेने के लिए लाहौर चले गए। 1925 में लाहौर में अपनी ''नौजवान भारत सभा'' के क्राँतिकारी साथियों के साथ मिलकर यशपाल ने बम बनाने का कार्य किया।[13]

30 अक्तूबर, 1928 में साईमन कमीशन के विरोध में आयोजित विशाल जनसमूह का नेतृत्व करने वाले लाला लाजपतराय जब अँग्रेज़ों की लाठियों से घायल हुए और बाद में 27 नवम्बर, 1928 को उनकी मृत्यु हुई।[14] तो नौज़वान भारत सभा के क्राँतिकारियों भगत्सिंह, राजगुरू, सुखदेव और यशपाल ने 18 दिसम्बर, 1928 को अँग्रेज़ आफ़िसर साण्ड्र्स की हत्या कर डाली ।[15] यशपाल और अन्य क्राँतिकारी लाहौर से फरार हो गए। यशपाल वापस काँगड़ा आ गए और भूमिगत् रहकर क्राँतिकारी गतिविधियाँ जारी रखीं। बाद में वे लाहौर वापस लौटे।

1928 में देश के राष्ट्रवादी क्राँतिकारी नौज़वानों ने 'हिन्दोस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी' की स्थापना की। सरदार भगतसिंह और चन्द्रशेखर आज़ाद इसी सेना के कमांडर थे। भगवतीचरण, सुखदेव, राजगुरू, बटुकेश्वर, शिव शर्मा, गणेश शंकर विद्यार्थी, अजय घोष, विजयकुमार सिन्हा और हमीरपुर के यशपाल आदि इस आर्मी के वीर सेनानी थे। हमीरपुर के पं॰ रूप चन्द, मंगतराम *(इन्द्रपाल)* और अन्य हिमाचली वीर, लाहौर में यशपाल तथा अन्य क्राँतिकारियों को आर्थिक सहायता प्रदान करते थे।*[16]*

8 अप्रैल, 1929 को भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने दिल्ली में केन्द्रीय असैम्बली में बम फैंका था।[17] यशपाल उन दिनों लाहौर में बम बनाने में व्यस्त थे। केस की तहकीकात के दौरान लाहौर की बम फैक्ट्री पकड़ी गई। यशपाल वहाँ से फरार हो गए और वेष बदलकर अमृतसर, पठानकोट होते हुए काँगड़ा में अपने विश्वास पात्र सम्बन्धी दीवान मानचन्द वकील के घर छुप कर रहने लगे। वे तीन वर्ष तक भूमिगत् रहे। इस दौरान उन्होंने लाहौर से आने वाली खबरों को प्राप्त किया। अँग्रेज़ी सी॰आई॰डी॰ ने यशपाल के हुलिये के इश्तिहार काँगड़ा, दिल्ली और लाहौर आदि स्थानों पर लगाए और उन्हें पकड़ने के लिए ईनाम भी घोषित किया।[18] फरारी की अवस्था में फिर यशपाल ने सहारनपुर बम फैक्ट्री के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान किया।[19] उन्होंने बम बनाने की विधि पर मंत्रणा के लिए श्रीनगर में प्रोफ़ैसर देवदत्त के पास पहुँच कर विस्फोट के सिद्धान्त तथा पिकटिंग एसिड बनाने की रासायनिक प्रक्रिया का गहन ज्ञान प्राप्त किया।[20] इसके उपरान्त यशपाल ने दिल्ली पहुँचकर भगवतीचरण से मिलकर रोहतक में वैद्य लेखराम से विचार विमर्श कर के बम बनाने की फैक्ट्री शुरू करने की योजना बनाई। वहाँ पर उन्होंने अपना नाम बदलकर 'किसना' रखा और वैद्य लेखराम के पुराने मकान में बम निर्माण का कार्य शुरू कर दिया।[21]

1929 में यशपान ने अन्य क्राँतिकारियों से गम्भीर सलाह मशबिरा करने के पश्चात् वायसराय लार्ड इर्विन को बम से उड़ाने की योजना बनाई। चन्द्रशेखर आज़ाद, भगवतीचरण, यशपाल, मंगतराम, लेखराम जट आदि क्राँतिकारियों ने इस योजना का विशेष कार्य यशपाल व बम फैंकने का कार्य मंगतराम *(इन्द्रपाल)* को सौंपा गया। यशपाल के एक साथी इन्द्रपाल ने दिल्ली में तुगलकाबाद किले की तरफ बदरपुर चैकी के पास साधु बनकर एक सुनसान पानी के स्रोत्र 'प्याऊ' पर डेरा जमा लिया था तो उन्हें तकरीबन एक, डेढ महीना एक योजना को कार्यरूप देने के लिए बहाँ बैठना पड़ा।

यशपाल वेश बदलकर उनके पास आते और उन्हें जरूरी सामान दे जाते थे। कुछ समय के पश्चात् यशपाल दो बड़े बम और अन्य आवश्यक सामान लेकर आये और थैले में बाँध कर साधु *(इन्द्रपाल)* की कुटिया पर रख गये और स्वयं पास में अन्धेरे में छिपकर बैठ गये। पास ही गश्त करते एक सिपाही ने उन्हें देख लिया। लेकिन इन्द्रपाल की तीव्र चाल से स्थिति पर काबू पा लिया। सिपाही के जाने के पश्चात् यशपाल व इन्द्रपाल ने ज़मीन के नीचे तारें बिछाने व रेलवे लाईन में बम दबाने का कार्य आरम्भ किया।

27 अक्तूबर, 1929 को रेलवे लाईन के नीचे बम दबाकर वायसराय की ट्रेन उड़ाने की जो कार्य योजना थी वह स्थगित करनी पड़ी क्योंकि 1 नवम्बर, 1929 को लार्ड इर्विन एक महत्वपूर्ण घोषणा करने जा रहे थे,जिसमें भारत को स्वतन्त्रता प्रदान करने के बारे में भारतवासियों को कुछ विशेष घोषणा करने वाले थे।परन्तु घोषणा में भारतवासियों को कोई विशेष राजनैतिक अधिकार नहीं दिये गये और क्राँतिकारी फिर निराश हो गये। फलस्वरूप वायसराय की ट्रेन को बम से उड़ाने की नई योजना बनाई गई।

23 दिसम्बर, 1929 को प्रातःकाल दिल्ली के निकट पुराने किले के साथ जंगल में यशपाल, इन्द्रपाल, भगवतीचरण और लेखराम जट ने मथूरा से दिल्ली जाने वाली ट्रेन पर बम धमाका किया। परन्तु वायसराय अपने निश्चित डिब्बे की वजाय और डिब्बे में सवार होने के कारण बाल बाल बच गये। निशाना ठीक नहीं लगा और आप्रेशन असफल हो गया।[22]

यशपाल ने इन्द्रपाल से मिलकर अगली योजना अप्रैल,1930 में लाहौर में भगतसिंह व बूटकेशवर दल जो केन्द्र असैम्बली में बम विस्फोटक तथा साण्ड्र्स कत्ल केश के अभियुक्त थे, को जेल से छुड़ाने की यशपाल से मिलकर एक योजना बनाई। इस कार्य के लिए इन्द्रपाल का लाहौर निवास स्थान मुख्य अड्डा बना। यशपाल तथा महान् क्राँतिकारी नेता चन्द्रशेखर आज़ाद भी इस सम्बन्ध में लाहौर आकर इन्द्रपाल के पास ठहरते और उनका मार्ग दर्शन करते थे। इस ऐक्शन के लिए बनाए गये बम के परिक्षण करते समय क्राँतिकारी नेता भगवतीचरण के हाथों में ही बम फट गया और वह 28 मई, 1930 को शहीद हो गये,उसके बाद दूसरे बम वहावलपुर रोड़ पर स्थित क्राँतिकारी अड्डे में एक अलमारी में पड़े पड़े फट गये। इन दुर्घटनाओं के फलस्वरूप भक्तसिंह और बटुकेश्वर दत्त को छुड़ाने की योजना विफल रही।[23]

वहाँ से यशपाल बम बनाने तथा देहात में काम करने का निश्चय करके वे दिल्ली के समीप रोहतक में चले गये। वहाँ वह एक वैद्य लेखराम का नौकर बनकर दवाईयाँ बनाने अर्थात् बम को मसाला बनाने का काम करते रहे,बम बनाने की प्रक्रिया में तेज़ाब का इस्तेमाल करना पड़ता था। तेज़ाब के पीले धुएँ के प्रभाव से यशपाल के धोती, कुर्ते इस कदर जर्जर हो जाते थे कि कपड़े के टुकड़े, धोने से हाथ में आ जाया करते थे । हर दो दिन बाद धोती कुर्ते बदलने पड़ते थे। कपड़े पहनने से धुएँ का असर उनके शरीर पर पड़ने लगा था। सारा शरीर हल्दी जैसा पीला पड़ गया। नहाने से त्वचा से महीन सी झिल्ली उतरने लगी। इन सब मसालों का असर उनके शरीर पर होता रहा जो आखरी जीवन में श्वास पर पड़ा। यशपाल को वैद्य लेखराम जी के नौकर की हैसियत से प्रतिदिन चार घण्टे तो बम बनाने की प्रक्रिया में लगाते पड़ते, इसके अतिरिक्त कुछ देर दुकान पर काम करना, दवाईयाँ कूटना, वैद्य जी को पंखा करना, उनके मित्रों के आ जाने पर उन्हें कुएँ से ठण्डा एवं ताजा पानी लाना आदि काम करते थे। फरारी की हालत में यशपाल को अनेक भेस बदलने पड़ते थे, कभी रोहतक की सेठ के रूप में, कभी पी॰डब्ल्यू॰डी॰ इन्जीनियर और कभी

फ़ौजी मेज़र के लिवास में रहना पड़ता था। सदा जान हथेली पर रखनी पड़ती थी। वह क्राँतिकारी दल और अँग्रेज़ सरकार के बीच चलने वाले सशस्त्र संघर्ष में भाग लेते रहते थे।[24]

26 फरवरी, 1931को एलफ्रेड पार्क इलाहाबाद में पुलिस मुठभेड़ में चन्द्रशेखर आज़ाद शहीद हुए।[25] इसके बाद क्राँतिकारियों में उभरे नेतृत्व संकट को भरने के लिए गढ़मुक्तेश्वर में गंगास्नान के दिन यशपाल को 'हिन्दुस्तानी समाजवादी प्रजातन्त्र सेना' का कमांडर इन चीफ बनाया गया। पार्टी की कार्ययोजना निर्धारित करने के उद्देश्य से यशपाल उन दिनों इलाहाबाद में ही रूके हुए थे।[26] सूचना मिलने पर 23 फरवरी,1932 को पुलिस ने उनके स्थान को प्रातः पांच बजे ही चारों ओर से घेर कर अन्धाधुँध फायरिंग शुरू कर दी। जवाब में यशपाल ने भी गोलियाँ बरसानी प्रारम्भ की। लेकिन सीमित गोला बारूद होने के कारण उन्हें मजबूरन आत्मसमर्पण करना पड़ा।[27] उन्हें कैनिंग रोड़ थाने में हवालात में बन्द कर दिया। यशपाल को वहाँ 14 वर्ष कठोर कारावास की सज़ा सुनाई गई। उन्हें कैदी के रूप में इलाहाबाद जेल में रखा गया।[28] एक दिन उनकी पत्नी श्रीमती प्रकाशवती ने डिप्टी कमीश्नर को प्रार्थनापत्र दे दिया कि:-

"लाहौर निवासी प्रकाशवती कपूर, वरेली निवासी केन्द्रीय जेल में बन्द क्राँतिकारी कैदी यशपाल से विवाह करना चाहती है"।

अगले दिन जिला मैजिस्ट्रेट से आया सरकारी पत्र यशपाल को दिखाया गयाः-

"लाहौर निवासी मिस प्रकाशवती कपूर, वरेली जेल में बन्द आतंकवादी कैदी यशपाल से विवाह करना चाहती है। कैदी यशपाल विवाह करना चाहता है या नहीं?"

यशपाल ने स्वीकृति लिख दी। विवाह के लिए 7 अगस्त, 1936 निश्चित तारीख हो जाने की यशपाल को सूचना दे दी गई। निश्चित तारीख को दोनों का विवाह सम्पन्न हो गया।[29]

1938 में काँग्रेस मंन्त्रिमण्ड़ल की, सभी राजनितिक बन्दियों को रिहा करने की शर्त के फलस्बरूप यशपाल भी छः वर्ष कठोर कारावास के बाद 2 मार्च, 1938 को वरेली जेल से रिहा हए।[30] 1938 के पश्चात् उन्होंने अपना अधिकतर समय क्राँति में भाग लेने के बजाए क्राँति के विषय में लिखने के लिए निश्चिय किया। उन्होंने लखनऊ में 1939 में हिन्दी में 'विप्लव' व उर्दू में' 'बागी' पत्रिकाओं का सफल प्रकाशन शुरू किया। जल्दी ही भरपूर लोकप्रियता मिली ।[31]

इलाहाबाद जेल से ही यशपाल के जीवन का साहित्यिक पक्ष प्रारम्भ होता है। जीवन का पहला पक्ष तो उन्होंने अँग्रेज़ों की ज्याद्तियों के विरोध में सशस्त्र क्राँतियों में व्यतीत किया। उन्हें बम बनाने के साथ साथ कलम चलाना भी आता था। अपनी विद्यार्थी काल में उन्होंने कुछ कहानियों की रचना की थी। 'सिंहावलोकन' यशपाल की वह रचना है जिसमें उनके जीवन के महत्वपूर्ण अनुभव अंकित हैं।[32] इसमें अनुभवों के अतिरिक्त क्राँतिकारी आन्दोलन के ऐतिहासिक पक्षों को भी उद्धधृत किया गया है। भगवतीचरण के सहयोग से उन्होंने 'फ़िलासफी आफ दी बम' पुस्तक की रचना भी की थी। उनकी एक अन्य प्रसिद्ध रचना 'झूठा सच' है जो देश के विभाजन की पृष्ठ भूमि अपनेमें समेटे हुए हैं।[33]

यशपाल के उपन्यासों के विषय सामाजिक और राजनितिक चेतना पर आधारित थे। उनके उपन्यासों में दिव्या, मनुष्य के रूप, अमिता तथा दादा कामरेड आदि प्रसिद्ध हैं। दिव्या उपन्यास में उनकी कला विशेष रूप से उभर कर सामने आती है। 'गाँधी की शव परीक्षा' में गाँधी के समाजवादी दृष्टिकोण का सुन्दर वर्णन किया गया है। इनके साहित्यिक पक्ष में भी एक स्वतन्त्र राष्ट्र के लिए तड़प हमें सहज़ ही मिलती है।[34]

राष्ट्र के लिए की गई यशपाल की अमूल्य सेवाओं के लिए उन्हें 1970 में पद्मभूषण से अलंकृत किया गया। जीवन के अन्तिम दिनों में उनका स्वास्थ्य काफी गिर चुका था। उनका विचार था कि मनुष्य को जीने की कला आनी चाहिए। जीवन का एक क्षण भी बहुत कीमती होता है। यशपाल का जीवन वास्तव में इस देश की जनता की अमूल्य धरोहर था। फरवरी, 1974 में साहित्य के क्षेत्र में उनके अमूल्य योगदान के लिए आगरा विश्वविद्यालय में उन्हें डी॰ लिट॰ की उपाधि से सम्मानित किया।

26 दिसम्बर, 1976 को यशपाल अपनी जीवन यात्रा पूरी करके इस लोक से विदा हो गए। इस प्रकार यशपाल काँगड़ा के पहाड़ी क्षेत्र के ही नहीं बल्कि भारत के एक कुख्यात क्राँतिकारी थे।[35]

6. निष्कर्ष:-

इस प्रकार यशपाल काँगड़ा क्षेत्र के उन स्वाधीनता सेनानियों में से एक थे जिनमें असाधारण साहस, देश को आज़ाद देखने की कल्पना और जीवन को देश पर न्योछावर करने की क्षमता थी। विदेशी साम्राज्य के विरूद्ध क्राँति का ध्वज आरोहण करने वाले, त्याग, तपस्या और अदभूत् साहस के प्रतीक कुख्यात क्राँतिकारी यशपाल का नाम काँगड़ा के समस्त पहाड़ी क्षेत्रों में ही नहीं बल्कि भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के इतिहास में सदा अमर रहेगा ।

7. संदर्भ सूची:-

1.हिमाचल प्रदेश सरकार: *हिमाचल प्रदेश के स्वतन्त्रता सेनानी, खण्ड-प्रथम,* भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला, 1985 पृष्ठ 504.; देखिये, हिमाचल प्रदेश सरकार: *स्वाधीनता की ओर,* भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला, 1993 पृष्ठ 72.

2.हिमाचल प्रदेश सरकार: *संघर्ष के वे दिन,* भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला, 1989 पृष्ठ 77. ; *देखिये, साक्षात्कार:* श्री आनंद कुमार सुपुत्र स्व॰श्री यशपाल, परिशिष्ट (2) पृष्ठ 374. *Dr. Amar Singh Prashar: Ph.D Thesis, Contribution of Freedom Fighters and Martyrs of Kangra, 1805-1947.*

3.यशपाल: *सिंहावलोकन; (सम्पूर्ण)* लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1997 पृष्ठ 42,44.

4.हिमाचल प्रदेश सरकार: *स्वाधीनता का संकल्प,* भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला, 2005 पृष्ठ 39. 5.यशपाल : *सिंहावलोकन; (सम्पूर्ण)* , लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1997 पृष्ठ 45.

6. हिमाचल प्रदेश सरकार: *संघर्ष के वे दिन,* भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला, 1989 पृष्ठ 77.

7. यशपाल: *सिंहावलोकन; (सम्पूर्ण),* लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1997 पृष्ठ 54-55.

8. हिमाचल प्रदेश सरकार: *हिमाचल प्रदेश के स्वतन्त्रता सेनानी, खण्ड- प्रथम,* भाषा एवं संस्कृति विभाग शिमला, 1985 पृष्ठ 504.

9. यशपाल: *सिंहावलोकन; (सम्पूर्ण),* लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1997 पृष्ठ 67.

10. हिमाचल प्रदेश सरकार: *हिमाचल प्रदेश के स्वतन्त्रता सेनानी, खण्ड- प्रथम,* भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला, 1985 पृष्ठ 50. ; देखिये, हिमाचल प्रदेश सरकार: *संघर्ष के वे दिन,* भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला, 1989 पृष्ठ 87.

11. यशपाल: *सिंहावलोकन; (सम्पूर्ण)*, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1997 पृष्ठ 78.
12. *वही*, पृष्ठ 104,105.
13. हिमाचल प्रदेश सरकार: *हिमाचल प्रदेश में स्वतन्त्रता सँग्राम का संक्षिप्त इतिहास*, भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला,1996 पृष्ठ 85.
14. यशपाल:*सिंहावलोकन; (सम्पूर्ण)*, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1997 पृष्ठ 124-126. *; Cited by,Singh Gulab: under the Shadow of Gallows, Published by Roop Chand at Teg Press Delhi, 1963 p 40.*
15. हिमाचल प्रदेश सरकार: *हिमाचल प्रदेश में स्वतन्त्रता सँग्राम का संक्षिप्त इतिहास*, भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला, 1996 पृष्ठ 90. ; देखिये, यशपाल: *सिंहावलोकन; (सम्पूर्ण*, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1997 पृष्ठ 132.
16.हिमाचल प्रदेश सरकार : *हिमाचल प्रदेश में स्वतन्त्रता सँग्राम का संक्षिप्त इतिहास*, भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला, 1996 पृष्ठ 88-89. *; देखिये*, प्रभाकर, संसार चन्द: *हिमाचली इतिहास के सुर्ख पन्ने*, नीरज प्रकाशन, फतेहपुर काँगड़ा, 2002 पृष्ठ 138.
17. यशपाल: *सिंहावलोकन; (सम्पूर्ण)*, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1997 पृष्ठ 140.
18. हिमाचल प्रदेश सरकार: *संघर्ष के वे दिन*, भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला, 1989 पृष्ठ 87.
19. यशपाल: *सिंहावलोकन; (सम्पूर्ण)*, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1997 पृष्ठ 189.
20. *वही*, पृष्ठ 108,212.
21. *वही*, पृष्ठ 217.
22. हिमाचल प्रदेश सरकार:*संघर्ष के वे दिन*, भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला, 1989 पृष्ठ 88. *; Cited by, Singh Gulab: under the Shadow of Gallows, Published by Roop Chand at Teg Press Delhi, 1963 p. 135.*
23. हिमाचल प्रदेश सरकार:*स्मृतियाँ*, भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला 1988 पृष्ठ 121. ; देखिये, हिमाचल प्रदेश सरकार:*स्वाधीनता की ओर*, भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला, 1993 पृष्ठ 41.
24. यशपाल:*सिंहावलोकन; (सम्पूर्ण)*, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1997 पृष्ठ 216-224.
25.हिमाचल प्रदेश सरकार : *हिमाचल प्रदेश में स्वतन्त्रता सँग्राम का संक्षिप्त इतिहास*, भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला, 1996 पृष्ठ 105.
26.यशपाल: सिंहावलोकन; *(सम्पूर्ण)*, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1997 पृष्ठ 1,467.
27.हिमाचल प्रदेश सरकार: *हिमाचल प्रदेश के स्वतन्त्रता सेनानी, खण्ड-प्रथम*, भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला, 1985 पृष्ठ 504.
28.हिमाचल प्रदेश सरकार: *संघर्ष के वे दिन*, भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला, 1989 पृष्ठ 88. ; देखिये, यशपाल: *सिंहावलोकन* ; *(सम्पर्ण)*, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1997 पृष्ठ 474.
29.*गिरीराज* साप्ताहिक: शिमला, 30 जनवरी, 1991 पृष्ठ 11.
30.यशपाल: *सिंहावलोकन* ; *(सम्पूर्ण)*, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद 1997 पृष्ठ 535. ; *देखिये*, हिमाचल प्रदेश सरकार: *हिमाचल प्रदेश के स्वतन्त्रता सेनानी, खण्ड-प्रथम*, भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला, 1985 पृष्ठ 504.
31.*गिरीराज* साप्ताहिक, शिमला, 30 जनवरी, 1991 पृष्ठ 11. *; देखिये*, हिमाचल प्रदेश सरकार:*स्वाधीनता का संकल्प*, भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला, 2005 पृष्ठ 41.
32.हिमाचल प्रदेश सरकार: *हिमाचल प्रदेश के स्वतन्त्रता सेनानी, खण्ड-प्रथम*, भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला, 1985 पृष्ठ 504. *; देखिये*, हिमाचल प्रदेश सरकार: *हिमाचल प्रदेश में स्वतन्त्रता सँग्राम का संक्षिप्त इतिहास*, भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला, 1996, पृष्ठ 124.
33. यशपाल:*सिंहावलोकन* ; *(सम्पूर्ण)*, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1997 पृष्ठ 290-293.
34. हिमाचल प्रदेश सरकार:*स्वाधीनता का संकल्प*, भाषा एवं संस्कृति विभाग शिमला, 2005 पृष्ठ 42. ; *देखिये*, हिमाचल प्रदेश सरकार: *संघर्ष के वे दिन* ,भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला, 1989 पृष्ठ 88.
35. हिमाचल प्रदेश सरकार:*स्वाधीनता की ओर*,भाषा एवं संस्कृति विभाग शिमला, 1993 पृष्ठ 75. ; *देखिये, साक्षात्कार*: श्री आनंद कुमार सुपुत्र स्व·श्री यशपाल, परिशिष्ट (2) पृष्ठ 374, *Dr. Amar Singh Prashar: Ph.D Thesis, Contribution of Freedom Fighters and Martyrs of Kangra, 1805-1947.*